डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

बीए प्रथम वर्ष हिंदी प्रतिष्ठा

द्वितीय प्रश्नपत्र

प्राचीन और मध्यकालीन काव्य

कबीर के दोहे – सप्रसंग व्याख्या

नाम

आदि नाम पारस अहै मन है मैला लोह।

परसत ही कंचन भया छूटा बंधन मोह।।

संदर्भ – प्रस्तुत साखी अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा संपादित 'कबीर वचनावली' के नाम शीर्षक से उदधृत है।

प्रसंग – 'नाम' शीर्षक के अंतर्गत जो साखियाँ हैं वे परम ब्रम्ह के नाम की महिमा को समर्पित हैं। प्रस्तुत साखी में भी ब्रम्ह के नाम के महत्व को व्यक्त किया गया है। कबीर ने नाम संबंधी साखियों में ईश्वर के नाम के प्रति, आदर – सम्मान की अभिव्यक्ति की है। ईश्वर के नाम के बिना जीवन में अज्ञानता का अंधकार फैला रहता है।

व्याख्या –

प्रस्तुत साखी में कबीर कहते हैं कि ईश्वर का नाम पारस पत्थर है और हमारा मन काला, जंग लगा हुआ मैला लोहा है। ईश्वर के नाम का स्पर्श पाते ही मेरा मनरूपी लोहा सोना बन गया। मेरे मन में जो मोह इत्यादि के रूप में सांसारिक बंधन था उससे मुझे मुक्ति मिल गई। ईश्वर के नाम रूपी पारस का मन में प्रवेश होते ही मन लोहा से सोना हो गया अर्थात पवित्र हो गया समस्त मोहमाया के बंधनों से मुक्त हो गया।

विशेष –

भाव पक्ष –

1.ईश्वर के नाम की महिमा का वर्णन है।

2. ईश्वर के प्रति अनन्य भक्ति – भावना की प्रधानता है, उनके नाम के स्मरण मात्र से मुक्ति मिल जाने की बात कही गई है।

शिल्प पक्ष –

1.अनुप्रास अलंकार है, पारस और लोह में रूपक अलंकार है।

2.दोहा छंद है।

3. शांत रस है।